

॥ श्रीगुरु ॥
॥ वक्रन्यासयोग ॥

१०८ ॥ श्रीगुरुजी प्रसाद नि जाय ॥
॥ श्रीहनुमंतयूजा का सो हनुमंत ॥

२

ASHA ARCHIVES

3472.

१ वं दं लु जि. ला व ह. का म लि ॥ कृ दि ह ल न म. स व र. ज. म.

१२ व व म. सि क या य नि म. ॥ ह य र क ह म. मि सा य र या स य. रु.
जून क गं ध मि न न या म. ॥ जी व र. वा र या ना म. ॥ मे व क न्य म यो.

१०८ १ श्री क जा य ज्ञां इ मि जा. ॥

१ श्री हं मुं यू जा. का सो. हं मुं सु. ॥

२

ASHA ARCHIVES

3472.

ॐ नमः शिवादिगुरोभ्यः ॥ ॐ अस्त्राय ॥ कवः मधन ॥ ॐ क
 निष्ठा य ॥ ॐ अनामिका य ॥ ॐ मध्यमा य ॥ ॐ गङ्गा य ॥ ॐ अंगुष्ठा
 य ॥ ॐ अस्त्राय ॥ कवः गलपुष्पा य ॥ ॐ तिकवः न्यासः ॥ ॥ ॐ हृद
 या य ॥ ॐ मित्रस ॥ ॐ मिखा य ॥ ॐ कवचा य ॥ ॐ नृपय ॥ ॐ अस्त्राय
 य ॥ ॐ गन्ध्यासः ॥ ॥ ॐ पश्चिमवकु ॥ ॐ उरुवकु ॥ ॐ दक्षिण
 वकु ॥ ॐ पूर्ववकु ॥ ॐ उरुवकु ॥ ॐ वकुन्ध्यासः ॥ ॐ अस्त्राय अ
 र्धपात्र मधन ॥ ॐ अस्त्राय हित्रधार्धपात्र दूग्धन पत्रय ॥

ॐ ३

ॐ अस्त्राय सिद्धयः ७ पात्रं कवचना वगुं ० न ॥ ॐ न्यर्धपात्र संस्का
 य ॥ ॥ ॐ सर्वज्ञा मृग मालिनी अद्वि ॥ ॐ फिरोदिन अमित्रसि
 ती अनादिवाधय अमित्राय ॥ ॐ स्यगन्धुवकु ॥ ॐ वकु चचाय अकवच
 ॥ ॐ अलफमकय अनेनृपय ॥ ॐ अर्ननमकय अजम्बु ॥ ॐ
 यात्मिका मूकट स्वयादीर्धवद्विपिनदिता ॥ ॐ ४ पूटिना ४ कुम्भेयव
 - सिद्धिरुलपदा ॥ ॥ मालिनिमुनि ॥ ॥ मन्त्रायथ ॥ ॐ कालिर
 महाकालि मां सः मनिगराजनि ॥ ॐ ॐ ॐ वकु कृमृषिदविमामा
 पन्धं गुमपुवः ४ दय दूगीद्वय ॥ ॐ नमो रगवगी इष्टयाधु

॥ खर्ची का गीत ना रात्र समुख कमलादि यद (छात्र खर्ची मूलं यर्क व
 व डं ॥ लिमिग विलसत्कर्त्तिका दक्ष ॥ नीलार्णव गखर्ची गगखम
 थ व द ॥ पसका वापका ड विग्राह्य कामरुक् नवविपल कितालि मध
 लिंग कूटी ॥ तस्या वनासि सयै सि नयन वृचि वात्र क मधुदिमाला
 धावा धावा दृहासा विवि विवि किलाया युसिं हा जिना आर्द सुवक्र
 ग्रवक्रात्र विमिव दधनी खट् मूझा रुमासा साहाना हिमना शुक त
 पद कमला श्री कूजा ली नमामि ॥ ॥ अथा गिरु का वसह कूल अक
 लश्रीम ॥ न ॥ अथ वानं दनाथ श्री कृष्ण का म्वा पादुकां पूजयामि ॥ ॥

श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं नमो रंगवती श्रीं कृष्ण काये जां जां जोरु रमान
 म श्रीं धावा श्रीं श्रीं मखि कां श्रीं किं विरवि च हल सल श्रीं श्रीं
 श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं कृष्ण कानं दनाथ श्रीं कृष्ण का म्वा पापू
 ॥ अथा व जां थ धाव जां धाव जां धाव जां धाव सर्वग ॥ सर्व
 सर्व श्रीं श्रीं सनम सुजां नूड रूप ॥ ॥ जां जां जां निखा स्व रुन्द महा
 ववा यनम ॥ श्री कृष्ण कात्मन पृथ्वी नम ॥ पापू ॥ हृदयादि यत्
 (गन पूजनं ॥ वक्र पूजनं ॥ चन्दनाकृत पृथ्वी सिंदूरार्थ ॥ पूजनं ॥
 ॥ इति मक्ति सहितं ॥ गता र्च पाया दकन सिं वयं ॥ अष्टवलिं दया ॥

[illegible]

यङ्गो पापू ॥ ॐ तिदा वम ॥ ॐ तिदा वपा गार्जनं ॥ ॥ पूर्व ॥ प्रया
 (गमहा कुरु ॐ ॐ ॐ मिता नमहा ॐ ववा यवुक्ता यथा पापू ॥ आये ॥
 ॐ ववृथमहा कुरु ॐ ॐ ॐ ममहा ॐ ववा यमा हथ्यत्री पा ॥ दक्षिणे
 ॥ ॐ कोला पूरे महा कुरु ॐ ॐ ॐ ममहा ॐ ववा यको मात्री पा ॥ ने अ
 ॥ ॐ अट्टहास महा कुरु ॐ ॐ ॐ कारमहा ॐ ववा यथे सुवी पापू ॥ प
 ॥ ॐ यमी ॥ ॐ रुयनी महा कुरु ॐ ॐ ॐ मरुमहा ॐ ववा यथा गद्दी पापू ॥
 या यथी ॥ यत्रिप महा कुरु ॐ ॐ ॐ कपाली महा ॐ ववा यळ्-द्रा यथी पापू
 ॥ उरु ॥ ॐ उका मु महा कुरु ॐ ॐ ॐ हीषमहा ॐ ववा यथाम्-क्ष पापू

स्वर्गनन्दनाथश्रीस्वर्गस्वाम्यापाप॥ १ ॥ पवनलाकवन्नरागममिनीया
 उमलककाटियागिनीश्रीपवनानन्दनाथश्रीपवनस्वाम्यापाप॥ २ ॥ म
 र्यालाकवन्नरागममिनीअष्टलककाटियागिनीश्रीमर्यानन्दनाथश्री
 मर्यावापाप॥ ३ ॥ नागलाकवन्नरागममिनीचतुर्लककाटियागिनी
 श्रीनागनन्दनाथश्रीनागस्वाम्यापाप॥ ४ ॥ षड्काटस्यन्नीभनेकाटम
 ॥ ५ ॥ वक्रपद्मासनासीनन्नीन्नीभनासनेनृदप्रगासनायनृपाप
 ॥ ६ ॥ श्रीमन्व्रानन्दनाथश्रीशक्तिन्यस्वाम्यापाप॥ ७ ॥ श्रीराम
 स्वराजानन्दनाथश्रीशक्तिन्यस्वाम्यापाप॥ ८ ॥ श्रीलामन्व्रानन्दना

थश्रीलाकिन्यस्वाम्यापाप॥ ९ ॥ श्रीकामन्व्रानन्दनाथश्रीकाकिन्यस्वाम्यापा
 प॥ १० ॥ श्रीसामन्व्रानन्दनाथश्रीसाकिन्यस्वाम्यापाप॥ ११ ॥ श्रीहाम
 न्व्रानन्दनाथश्रीहाकिन्यस्वाम्यापाप॥ १२ ॥ षड्काटस्यपूर्वकाट
 म॥ १३ ॥ वक्रपद्मासनासीनन्नीन्नीभनासनेनृदप्रगासनायनृपाप
 पाप॥ १४ ॥ श्रीश्रीश्रीभनन्दनाथलंश्रीवक्राम्यापाप॥ १५ ॥ श्रीवक्राभन
 दनाथलंश्रीवक्राम्यापाप॥ १६ ॥ श्रीकुलंगीभनन्दनाथलंश्रीकाला
 म्यापाप॥ १७ ॥ श्रीमधुभनन्दनाथलंश्रीमहाकृष्णाम्यापाप॥ १८ ॥
 ॥ षड्काटस्यअग्निकाटम॥ १९ ॥ वक्रपद्मासनासीनन्नीन्नीभनासनेनृदप्रगासनायनृपाप

दाजिवप्रतासनायमपाप ॥ ॐ श्री अनादिविमलानन्दनाथम
 श्रीमार्गगिन्यामपाप ॥ ॐ श्री सर्वरू विमलानन्दनाथम श्री पूर्ण
 अम्बापाप ॥ ॐ श्री योगविमलानन्दनाथम श्री चर्यामपाप
 ॥ ॐ श्री सिद्धि विमलानन्दनाथम श्री चर्यामपाप ॥ ॐ श्री स
 मयविमलानन्दनाथम श्री कूटिका मपाप ॥ ॐ ॥ वदका
 मने ज्ञानकाशम ॥ ॐ वदका मने ज्ञानकाशम ॥ ॐ
 किप्रतासनायमपाप ॥ ॐ श्री विमलानन्दनाथम श्री कू

टिका मपाप ॥ ॐ श्री उता नन्दनाथम श्री लक्ष्मी अम्बापाप
 ॥ ॐ श्री वदका मने ज्ञानकाशम ॥ ॐ श्री चर्यामपाप ॥ ॐ श्री चर्यामपाप
 दनाथम श्री कोल चर्यामपाप ॥ ६ ॥ ॐ निवदका मने ज्ञानकाशम ॥ ॥
 ॥ ततामलुलायमपाप ॥ ॐ ॐ वन्दमलुलायपाप ॥ ॐ सूर्यमलुलायपा
 प ॥ ॐ वदिका मलुलायपाप ॥ ॥ ततस्त्रिकाशम ॥ ॐ श्री स्वाहाव
 दिप्रतासनायमपाप ॥ ततामने पूर्ववत् ॥ आवाहनादि क
 वधि ॥ ६ दयादिपूजन ॥ वकुादिपूजन ॥ अर्घ्यादिक न अनामि

कयासंगपर्य॥सुगन्धकसुमेनपूज्या॥मृदुहृदयप्रयत्नगथाया
 निमृडापद्ममृडात्रिभिरामृडाप्रदमथि॥पूजयेद्विद्यया
 मृगुगुल्लुगुगुगुदने॥४॥दृढयमनुदनेवैद्यंदापय॥मूलम
 मृधकमात्रीमञ्जय॥॥ततोमूलमनुदवलिपूजये॥५॥ऊया
 रुदियांनत्रिकन्यादि१३॥ॐतिमहावलि॥५॥सर्वपी॥०॥पपी
 ०नीत्यादि१३॥ॐतिसमयवलि॥४॥ततोहृदुकादिवलि॥५॥ऊया
 अक्रायअवतन२॥कृपपालमहावलकपिलमहारावरासूयणि

नेत्रकालामखगन्धपूष्यवलिपूजांगद्वारोत्रवरूपेष्टेगुगु२॥
 वृ२॥ख२॥ल२॥रुं॥महाजामाधिपतयस्वाहा॥ॐतिकृपवलि॥४॥
 ॥॥३॥ऊ॥दी॥भी॥दवीपूष्यवदुकनाथकपिलऊरावावरावासवः
 त्रिनेत्रकालामखगन्धपूष्यपूजांगद्वारममविद्यानूहन२॥पूष्य
 दय२॥ऊ॥दी॥ह्रीं॥ह्रीं॥ह्रीं॥स॥४॥ॐतिवदुकवलि॥॥ॐतिवृणयं लि३
 दयास्वगुगुमञ्जय॥॥ततोमहूर्लकावये॥॥३॥ऊ॥ह्रीं॥सं॥
 सिद्धिनाथायविद्महेकृद्विकाशेधामहि तन्नामाकृपयादया॥

हंल संल आकु किं श्वन न ऊ श्वन नन्दना थ आकु किं काम्या पापू ॥
 ॥ ॐ निगय गी ॥ यथा भक्ति स्मृति कादि माल या ऊ पे ॥ गुच्छा नि
 गुच्छ (ग) कुली गृहा ष्म ७ कृ न ऊ प । सिद्धि र्वि तु मे दयि
 त्यस्य सा दा ७ कृ ऊ श्वनि ॥ ॐ नि पू र्ण निवे दय ॥ ॥ स्मृ प कृ र्ण
 ७ ॥ श्री स व र्ण म धु लान् कृ म प द नि हि ता न न्द म कृ नि ॥ ॐ का
 प्रा स न मा नृ र्ण व द्र प द्वा स न स्मि तां । व द्र प का व स मा प तां । श्री
 कृ दि कां न मा म्य हं ॥ महा मा या ॥ पी ठि का स्म व ॥ य (थ र्ण प ॥ ०

७ ॥ ॐ गु र्णि चा दि ॥ ॥ त ग स्म र्ण ॥ ७ ॥ या गि नी य कृ म च स्म मा नृ
 म धु ल व द्रि तं । न मा मि मि त्र सा ना थ र्ण व र्ण र्ण वी प्रिये । आप
 दान् द वि ता न् या ग न् स म या चा व र्ण य ना ७ ॥ स व र्ण व य पा हं कृ
 दि य य कृ स मे ल कं ॥ स पृ ऊ का र्ण प्र ति पा ल का र्ण सा मा न्य त च
 कृ त पा ध ना र्ण । द म स्य ग्रा ह्य स्य प र स्य ग्रा ह्य ४ क या नृ भ र्णि र ग वा
 नृ कृ ल म ४ ॥ न न्द सा ध क कृ लान्य नि सि द्धा ४ भा पा ४ व त नृ स म य
 दि वि या गि नी नां । सा भ म् वि स्मृ ग नृ का पि म वा य व स्म य स्या

ऊ प्रा ॥ स्नायक वचादि कं यथा भक्ति पठित्वा भक्त्योपायं समर्प्य
 य ॥ ॥ तदथा किं हृदयं स्वयं गृहीत्वा तस्य रावः ॐ ह्रीं तादि कं
 ह्यात्वा ॥ ॥ ततो वक्ष्यमानं मनुजं गच्छेत्तदीयमूलपी ० त्रिपी ० य ॥
 ॥ मनुजयथा ॥ ॐ य प लं च ल चि हं यता मय र ॐ कं ह्रीं मीं स ॥ ॐ नि
 मनु स प वा रं ऊ प ॥ ॥ ततस्वर्णि गं व क मान मनु ऊ प ॥ मनु
 यथा ॥ ॐ नि मनु द म वा रं ऊ प ॥ ॥ पुनस्तस्या मूलपी ० ऊ
 प ॥ ॥ मनु यथा ॥ मृ ॥ ॐ नि द म वा रं ऊ प ॥ ॥ ततः ४ अ
 त्मानं रं ॐ य व स रू पं ॐ ह्रीं तादि कं हृदयं स्वयं ॐ ह्रीं तादि कं

मनु ऊं ता र्या मू द्रा या मूल पी ० निर्वनिथा ऊ य ॥ व क मान मनु द
 ॥ ॥ मनु यथा ॥ ॐ धर्मा धर्म रु वि दी पः आत्मा ॥ श्री मन सा धू या ॥
 स्रष्टु म्ना व र्म ना नि न्यः मनु व ल्ये ह हाम्य हं स्वा हा ॥ ॐ नि मनु द र्म र्म था
 ॥ ॥ ततः ४ भक्ति स्तुति प र्यन्तं यथा काम य र्था कृ त्वा ॥ ऊ प
 क र्था ॥ यथा भक्ति भर्ग सह र्म वा ऊ प ॥ ॥ ततो यथा भक्ति स्तु
 व क व चादि कं पठित्वा विसर्ज्य ॥ यथा ॥ ॐ प्र का भ का भ रु
 स्ना या म व लं वा न्म नी धू वा ॥ धर्मा धर्म क रा स्नेहः पू र्ण म र्म
 ह हाम्य हं ॥ स्वा हा ॥ ॥ ॐ नि मनु द र्म वि स र्ज्य ॥ ॥ ततो व क्ष्या

दिक् सत्रं मन्त्रं दद्यात् ॥ संभवनमनाचार्यमुपमनुष्टमाध
 कः। कृतपिसिद्धिस्तानि स्याद्वीयविमुखीरुव ॥ निवमन्त्रो मुसं
 यागवात्रभक्तं उपयदि। स उपकारिगुणितं दवीसंतावकुरुव ॥
 ॥ ॐ निमकि पूजा उपविधिः समाप्तः ॥ ॐ सु सु सु सु स्वाहा
 ॥ ॐ अमृतं अमृतं हवे अमृतं वरिषि अमृतं आवय र स्वाहा ॥ कला
 पूष्य साधनमनु ॥ ज्ञाता यत्र ज्ञानार्थं पदाद्यदि न संतु व। पूष्यं
 यं तु पूष्यं न तु रुतानन्याय कल्पते ॥ यदद्यादमवार्थिका न्यूना
 य अपि वा रुव ॥ अर्कं व मासिकं यस्मादाद्या हा जातं भविषी ॥ अ

न गये गे गं नामनात्रिकाया कथं यन। यथा यथा ल्यवयसः प्रसक्तं हि
 तथा तथा ॥ स्वयमागत्य सा देवी गृह्णाति निजसायिनी ॥ सेवय
 लिन जानु हं कथामादातु वरुते ॥ तस्मात्प्रियं कर्षीत न दानं
 व्रज गतये ॥ ॥ पूष्यताया मिथ्या न कं वजे पूष्यं पुकार्तिनी ॥ ॥
 रतुं न मा ह नूदाय ॥ ॥ जात्र दउदाय ॥ त गवः सर्व कर्माणि भु
 त कर्मा हलाय ॥ ह नूते व नूदस्य महावीर्यं धनस्य च ॥ मनु
 र्ति य कर्मा ॥ दुहि म पत्र म धन ॥ ॥ म कर्षत उवाच ॥ देवर्षि म
 धूर्तं कर्मा कल्पे र्दं धनं वचः ॥ एकं नूतनं नूदस्य च कर्मा धन

स्यात् ॥ सर्वसाधनसाधनस्य ॥ मन्त्रमनुमहावली ॥ यनाद्यावित्तमायुषः
 लीलयादिजसकम ॥ चतुषष्टीत्रपसात्रा ॥ षडं सध्वपत्रिग्रहानु
 ॥ भगवत्कारुण्यमन्यथाकायाचतुर्दश ॥ विषग्रहाधमभगमा
 ॥ अष्टात्रिचिकंदिज ॥ चतुषष्टीवृक्षग्राहसान्गध्वष्टाविका
 भगवत् ॥ सफासूत्राजयश्चांश्च तथाचाष्टविधकाग्रानु ॥ चतुर्विचि
 विषानुधाग्रानन्येवपत्रिसंज्ञयानु ॥ चतुःसिधत्रयनृपाकानु
 रूतानां विविधनृग्रहानु ॥ अकिन्याविविधकाग्रानुहृतवष्टद्व
 त्रौदय ॥ कृत्वाहियाग्रानुखाखोडानुहर्षयष्टसलीलया ॥ गुह्य

कायादलपंचनसंयवेवसायन ॥ षष्ठांशूनतथावेव रूपहामनसि
 द्यति ॥ विद्वेषसात्राहसोय ॥ वध्वमाकर्षणं तथा ॥ यनालविविधन
 य ॥ खटिकापादकातयः ॥ रुद्रालसहस्रादि ॥ रूपस्यपत्रिवर्कनी ॥
 सफदीपाधिपत्वंय ॥ खचत्रत्वंयसिद्धति ॥ विद्याधराधमसर्वेषां ॥ य
 कवर्कत्वमवय ॥ सुवर्धुधरापतनीसिद्धानां समकर्षणी ॥ सुसु
 नंपत्रसेन्यानां सपत्रत्वंयसिद्धति ॥ अमूकानां सहस्राधम
 नुसिद्धिं वृवीमि ॥ अकृतिदवदवस्य ॥ अर्न्याम्याष्टमद्विज ॥
 पंचवकुं महाहीमं विपंचनयनादल ॥ सूर्यकाटिकगारासंक

पिवकुं सुतजसं ॥ दमहिमु कयायकुं न स्यावलिनी कूकादं
सुकाकालवदनं कूटीकटिलकं ॥ कलकं ॥ कलत्समं
कलिकु ईतनूतं ॥ मुखकालवहं कालागेली कंदहनकर्म ॥ ख
प्रविभूलेख दंगं पाभं यां कृमपवर्तं ॥ दुर्मं ऊनिगि कामं दुर्मं म
बलमृष्टिकं ॥ जगवधाययन्युयं कलदायधम्यन ॥ प्रमासनाप
त्रिस्तं नानात्रलविहसिनी ॥ वक्रासत्रधर्तदर्वं वक्रमृदुनलप
नं ॥ कलिर्नदभ्यगविप्र ॥ सूर्यकाटिसमद्युति ॥ तस्यवदकिर्धवकुं
नात्रसिंहं महावली ॥ अग्नयगजवपुर्षं तीवर्षं तयनाभनं ॥ पञ्च

मं गमगुं वकुं वक्रकुं महावली ॥ सर्वरुगप्रसमनं विषनागनिर्कृत
नं ॥ उरुयगुं कर्तवकुं वागहं तीवर्षं ॥ कृष्णं ऊननिर्हं योड
कलत्मानं महावली ॥ दं सुकाकालविकुर्मं सर्वयुद्धनिवात्रधं ॥ पाता
लं सिद्धिदागार्थं कवत्रागविनाभनं ॥ ग्रहापस्मात्रसमनं कूत्रग्रह
निमर्दनं ॥ खयत्रीरूपिकाग्रामा मातत्राध्यविमर्दनं ॥ उरुखलाननं
धार्त्रं तीवर्षं योडरूपिधं ॥ कूर्चनिखलनादभ्यदानवाहदकाटय ॥
॥ तस्यमर्तुं महादीर्घं गजगजध्वं गुसं ॥ सर्वसिद्धि कर्तमर्तुं सर्वका
मरुलपुदं ॥ सर्वार्थं हवर्षं मर्तुं सर्वभक्तविमर्दनं ॥ पत्रयकपुथं मे

न पत्राय धविनामन ॥ पत्रदत्र प्रममन ॥ भग्ननाथे व कृन्तनी ॥ ॐ ह
भयार्थं व कृन्तनी वलद वं वदुल्लर ॥ साधकः सिद्धिदाता रस्वत्रिगना
प्रसन्नयः ॥ ॐ ह भयं द व द व भ मित्या ह भ ग वान् ह त्रिः ॥ ॥ अथा
तसं पु व भामि पूजा कर्म यथा विधि ॥ ॐ का व पे क मा दो वा स
नाय नमस्तथा ॥ प्रथमं ह न ॐ मनु मूर्त्य ह नू स यत् ॥ मूर्ति व कृन्त
प्रथमं ह नू नू द स्या त्ति ॥ पञ्चात्क व भार्या ॥ अथ यच्च विधान त
॥ पञ्चा ह द य पर्वतं क व भु द्विष्ट का व य ॥ पञ्चा ह द य न्या सै नु
वा ग व द्द द्विष्टा रुम ॥ ह द य ह द य न्य स्या मित्र ॥ मित्र सिदा प य ग मि

खायान्कुमिरान्यस्य क व र्व क व व न म ॥ न न न न न न विन्य स्या नू नू दि क
विदि क व ॥ मूला व नाम नी न्य स्या त्स र्व क र्म क वी मूर्ति ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
ता स नाय नमः ॥ ॐ ॐ ह नू मूर्त्य नमः ॥ ॐ ॐ ह द य नमः ॥ ॐ ॐ
मित्र सखा हा ॥ ॐ ॐ मिखा यो वी व द् ॥ ॐ ॐ क व वा य द् ॥ ॐ ॐ न य ग
या य व द् ॥ ॐ ॐ अ म्ना य रु द् ॥ न ग र्क वा न् न्या स ॥ ॥ पञ्चा ह द
मल मूर्ति द न य ॥ ॐ ॐ ॐ ह नू म नू म हा व ल प ग क म स र्व द् द नू र
ऊ य र र्म य र र्म ३ र्म र्म र्म र्म ॥ पूर्व व क्ता य नमः ॥ ॐ ॐ स र्व द् द
नू पु म र्म य र र्म ३ र्म र्म र्म र्म ॥ दक्षिण व क्ता य नमः ॥ ॐ ॐ व ग ह न

ASHA ARCHIVES

3472

100-100

१ या न ने पालि का व स न द ह न न (ग मा सि पो ध व गु ड) श्री म कू डा डि क न्या व
 व न न य ति (वो वा स य ता व क मो) ग हि श्री (मे व सिं ह न प ग ध म कू ट) : (भार
 मा नां प्री य (म श्री म कू की कू डि का या ४ सु व म पि य लि ख डी व र्ण र वा ल म का सो ॥
 ॥ आ दो श्री कू लू द वं त द नु च प वि श्री वि भ ना र्थ गु रूं च न त्या दो पा द प दो
 नृ प म लि म धू पे ४ स व मा ना व नि र्ण । का व की स्व ग्य वे या क व ध म लि ग (ध
 र्मा ल या (भार मा नो त कि य ४ श्री कू का या ४ सु व म पि व वि त जी व र्ण र व स र नृ ४ ॥
 १ स व ग १ ३ २ मा न लि न डे कु ॥ न का व र्ण र व स र ति वा न र्ण
 य र्ण ॥ ध ग ड र्ण व न ग यो द स र वि ह या का या र्ण ॥

३२

२ आ णी आ न न्द व ली अ म त क ल त ली आ दि भ कि प गा यी मा यी मा या क
 रू पी स टि क म नि म यी मा म गा डी प रू डी । ह्ना नी ह्ना ना र्थ रू पी न लि न प वि
 म ली ना द रू का व म ली रा गी था ग स न स्का ड व न ग सि क यी गु न्द यी र्ण न
 म र्ण ४ ॥

दह २ सर्वविघ्नान् हूँ ३ रुद्र स्वाहा उरु वक्रा यनमः ॥ ॐ ह्रीं क्रीं
 हूँ रुद्र स्वाहा हन २ दह २ सर्वदृष्टाय रुद्र ३ पश्चिमवक्राय नमः
 ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं खं खं दक्षक हूँ ३ रुद्र सर्वदृष्टाय दक्षक हूँ रुद्र उरु वक्र
 का यनमः ॥ नृतिपं च वक्रं न्यासः ॥ ॐ ॐ ॐ सर्वदृष्टाय त्रिवात्र (ह)
 नमः ॥ धूपं दीपं गंधपुष्पं नैवेद्यं यन्निवेदय ॥ मयि मांसादि
 सर्वाणि पूजयेत् ७ व्रतमन्धरी ॥ मूलनलकृष्णनसिद्धांतनाथसंज्ञ
 संयः ॥ उक्तमनुचयप्राकाशकमयर्गं कथय ॥ हामं यैव प्रकुरुय

च २

यारथकी जापसंख्याया यदि हामं न कुरुयं तत्सर्वं निःफलं भवति
 ॥ तस्मात्संप्रयत्नन कृपहामं च कावयेत् ॥ अष्टाक्षरं मूलनकृष्ण
 कृष्णं न हामयेत् ॥ उर्वविघ्नान् कुरुयं मूलवक्रास्य नात्र द ॥ द
 क्रि (ह) पीत पुष्पं पश्चिम (ह) तपुष्पकैः ॥ उरु वक्रास्य पुष्पं ५
 रुद्र वक्रास्य पुष्पकैः ॥ अनुर्वक्रास्य पुष्पकमयर्गं हामयेत् सुधीः
 ॥ मूलवक्रास्य देवर्षिगिलाशं यवसंयुतं ॥ रुद्रं श्रीरुद्रसंयुक्तं
 समिधं विल्ववृक्षकं ॥ अतमर्कं वदं क्रि (ह) यवं अगिलसंयुतं ॥
 आखण्डामयर्गं युक्तं मांसं वहनिष्ठस्य च ॥ हामयन्मनिष्ठां हूँ व

केशवक समीधकी॥ समिधं वटवृक्षं च निलार्घ्यं यवसंयुतं। मत्स्य
 मांसादिकं यूकं। हामयत्यग्निमस्य च॥ काष्ठं विद्रुकं संयुक्तं च न
 यवतिलं तथा। कृत्वा गमांसादिकं संयुक्तं। हामयद्रुवस्य च॥ समि
 धं वटवृक्षाख्यं तिलं यवचूर्णं तथा॥ हविषस्य युतं मांसं हामय
 दूर्ध्ववक्रुका। यगुष्मः ३ पूर्ववक्रुस्यात्सदा जातिरुलं रुवः ७॥ सिद्धि
 तसा कलाः १॥ अष्टा। हामं कुर्यात्समाहितं॥ किमन्यच्च द्रुवा कनवर्धि
 रुं नैव भव्यते। ॐ दं पूजा कर्म दिव्यं न दयं यस्य कस्यचिः ॥ नाभि
 स्त्वा यपुदागव्यं मेरुकुख्यः ४ कदाचन॥ पत्रमिष्य न दातव्यं मूर्षायात्मा

यपूजकी॥ नदयं पापमालं ४ गुत्र निन्दायता यवा दयनु मणरा
 कायः गुत्र किं यता यव॥ अन्यथा १॥ गमपय यत्नं न न सिद्धिनि
 साधकं॥ प्रका १॥ असिद्धिस्तानि स्यान्कृत्वा न गसंभयः ॥ न स्मात्सर्व
 पयत्नन १॥ गमपि गव्यं द्विजाकृम ॥ ॐ दं वरुस्य पत्रमं न ववि प्रपु
 काभिर्गं॥ ॥ ॐ ति वे हा य संहिता यो रु ग व न प ३ व क्रु सा ध न वि
 चि ३॥ ॥ ॐ रुं स ३ सर्व द्रष्टा न पु म द न अ मू क द व द रु आ नि मा
 त्रि ल हि त्य य न क स्ना य मां सा स्मि म रु १॥ अनि ग मु क्खा हि २
 नि द म के न दू ३ ३ ४ रु द् ॥ वलि द द्या द द्य म यो स्मि त्या व द द्य कि १

[illegible]

ॐ पुं ब्राह्मणाय नमः ॥ ॐ धर्माय नमः ॥ ॐ ह्यनाय नमः ॥ ॐ वेदाय
नमः ॥ ॐ नेत्राय नमः ॥ आद्यादीभ्यो नमः ॥ ॐ अर्धमाय नमः
॥ ॐ अह्वानाय नमः ॥ ॐ अवैवाह्वयाय नमः ॥ ॐ अनेत्राय नमः
॥ पूर्वदिग्बार्ह ॥ ॐ पद्मासनाय नमः ॥ ॐ नेत्राग्रिमक्षुलाय
नमः ॥ ॐ नेत्रं सूर्याय नमः ॥ ॐ नेत्रं सप्तमक्षुलाय नमः
॥ कथिं काकं वदस्व ॥ ॐ दूँ द्रीँ हँ हँ यूँ रुद्र ॥ मृग ॥ पूनः
वज्रम् ॥ ॐ वज्रकाय वक्रकुक्ष्यकपिलपिशलनयकपालव

दनाई कम महावल व कम रव गति जि जि कम महा यो ड दं ड्रा क र ह क
 का मालि न महा क र प्र हा नी लं क म्भ व महा (ध त र्व) ध (मे ल प्र वा ह
 ग ग ध य व उ क्क हि र ग व न्म हा व ल प ग क म रं य व उ क्क हि स हा
 दी र्घ ला म्भु ल न अ म्भ क व वृ य र हं ऊ र ख र खा हि र म्भु रू रू र
 रू रू ॥ मूल मा ला म नु ॥ म (ध) ॥ उं अं आ स ना य न म ॥ उं हं
 ऊ ना य न म ॥ पू र्व प र्ण ॥ उं मा ह ना य न म ॥ द कि (ध) ॥ उं यो ध
 न न म ॥ प श्वि म ॥ उं ऊ न न्ये न म ॥ उ क्क य ॥ उं ॥ न्नि (ग र्प) ॥

सिद्धि म न्त्रा अ न न व लि दान न न कि प्र से न्य क्क र क्क य दि गि ॥ क
 पि व क्क व क्क य क्क रू क्क क म्भ दं ड्रा क माली व क्क व म्भु प्र न्या ली रू
 द क्क प र्व तं वा म्भु ऊ ली गु ल न म्भु सा ध क स्य व वृ य द्या ग य ॥
 ॥ उं न मा ह ग व त वा न न ग य म हा व ल प ग क मा य ग ग
 ध ग म न सा ग यो क्क व ल लं वा स प्र म थ न उ क्क हि र ग व न्म व क्क य
 वि (ध) य म स हा य म्भु ग्री व स र्व अ ति ता ग ग त ह्म न वा न व क्क वा यि
 न ग क्क अ प व अ क्क य म म्भु र्नि वा य व (ग ना ग क्क अ सि न् पू डा प
 हा नी पु वि म्भु गी ग गृ क्क र अ यो ग म्भु क्क र उ क्क वी व क्क ग त प न स त्

नवायवराजनखजवायय रूपनयक मरीयप्रकिदरहगवनसूक्त
 यस्वसिस्वसि ॥ उं अं नूं कूं कां यों यों दूं दूं दूं रुट् ३ स्वाहा ॥ उं अं नूं
 कूं कूं कां कां कां यों यों कां आहनमनरौ नवायनमः ॥ उं अं हं हां हूं हूं
 कूं उं अं आहनरौ नवायनमः ॥ वलि ॥ उपसृणु ॥ उं अं उं नूं दूं हं ऊर
 दूं दूं रुट् स्वाहा ॥ मूल ॥ उं अं नूं दूं रुट् हनमनमहावल उं पत्राक
 मुं मउं नूं दूं रुट् दृष्टानरौ ऊरहनरकिदरहिंदरमागन्ध
 धपदीपक वलिपूजा अथतत्रगृहकार सर्वसनानीर्ध सयरहसि
 कूरुउं नूं दूं रुट् स्वाहा ॥ वलिविषयसनारुजनसंतवा ॥ साय ॥ ॥

रुडं नमोहनरौ नवाय ॥ ॥ नमस्तुहनरुद्राय हेनवायमहात्मने । व
 य्मवर्षा यतीमाय । तयानकनमो मुने ॥ १ ॥ वायूपुत्रमहावीर्य । अथ
 तवभ्यप्रवाहने । लंकाप्रमथनंदर्व । ग्रामसहनमो मुने ॥ २ ॥ कृष्णमा
 नमहातऊं तऊमध्वमध्वर्ग ॥ प्रयासनापविस्मृनु पुण्यावीरनमो
 मुने ॥ ३ ॥ कपिवकुं महानऊं वभ्रकावृक्षसंनिर्ग । क्षालारूपमहात
 ऊं प्रिनर्णवनमो मुने ॥ ४ ॥ अथतवर्क महादीर्घ । नावर्हिहवदकि । ध
 । पश्चिमगार्कवकुं नु वकुं नु धुनमो मुने ॥ ५ ॥ उरुप्रभूकनमूर्ख । क
 श्रीजनसमपुर्ण । ऊर्ध्वयाननंदर्व । धावर्षनमो मुने ॥ ६ ॥ दगहिमु

करैर्यकी नख आवलिगी कूकी। मख धारै वह काला काला निभनभा मु
त ॥ ११ ॥ विद्युत्पुं ऊनिरीं दर्व खधात मिव सीनिरी। सूर्यकाटि पुगी का
भी दह रूपनभा मुत ॥ १२ ॥ दृष्टा कनाल वदन। मित्रा माला विरुषभी
। महावीर भवै योई ही बधायनभा मुत ॥ १३ ॥ दुर्ग सीना वन काय प
त्र से न्यं पुहं ऊनी। अक्षु संहा वधै योव सनारं ऊनभा मुत ॥ १४ ॥ यनवा
याचिता निर्य सव्वत्र का पचावकी। मद्यमां सा भवादि यी पूजनीयं नभा
मुत ॥ १५ ॥ न दूरि कं हवै कृप नवमात्री प्रवर्तन। नवो यागि रुयं नग
सर्वत्र नभा मुत ॥ १६ ॥ एक कारीदि कारी वा। गिकार्य य ४ प १० न ४

। अलीष्टुल माप्राति वांका सिद्धि नभा मुत ॥ १७ ॥ हे वर वं हनू व
जाय अक्षु संहा वधाय च। एक वीर भवै दर्व कपि याऊनभा मु
त ॥ १८ ॥ ॥ ॐ मिह नूरे ववसा रं समापं ॥ ॥ अरु ममु ॥

रुं नमश्च भुकाये ॥ ॥ पंचाननी पंचदशभयनगी वलपुण्ययन्दु क
लादिरुषी। दिग्बद्धां दिग्बसना पत्रिष्ठां लक्ष्मीरुज सिद्धि पदाख्य
पू ॥ ॥ प्रवाल वाला कूनिरीं गिनगी अक्षु पार्श्वी किनवा गुरु
की। रुक्मा रिवन्दे अक्षु रूषध अक्षु। मायूत्रगी मायूत्र काख्य भकी ॥

चमचमन्दाहपुराणिनगी वृषन्दुर्गवदकयावियाकिगी। मूला
 दिहसी। नुऊगसिहसीमिवांरऊसिद्धिवप्रपदगी ॥ स्ववर्धव
 धेकनिरामिगीभुगीस्व। मनुगंस्वभ्रगदाविगांसकायविन्दुम
 कूटायलंकगी। गिलायनानांपुरकामिवेवूगी ॥ काधायमहाऊ
 लजायतागी। दधुदिहसीवप्रवत्तहसी। कोमात्रिकानांकलिका
 मनाभी। दयीरऊ। मभ्रगिरवाहसी ॥ पाश्चवजावकुसत्रावृह
 कप्रसत्तधूपंनप्रधमरी। गदायधदेववनाग्रियूपं। लीमंरऊरक

धम २

रयप्रधमगी ॥ उद्दिनरिनाप्रनसीनिराअंस्ममुखयमीस्मिगनूग
 याऊं। अमयहगाधिपतिंरवेगी। हतेभ्रवंगीपुरकामिनिह
 ॥ आलाहिनाहापुकटास्मिहूपी। दंष्ट्राकमालांगवकीटलागी।
 । रंक्कावभनारवहीतिनाभी। रजामिनिह्यांनुवनेकपूरगी ॥ व
 डवरासंनवचन्दचूडं। हाजदिहसीवृषयाऊकतुं। हगाधि
 नाथंरवरागनाभी। नृयभ्रवंगीपुधमामिनिह्यां ॥ मिवायेसर्वम
 पाये। सुष्टिस्मिन्ककावक। रकानांरयनाभये। कूजायेसगगं
 नमः ॥ कल्याणकालानलसीनिराअं गतिपुराणिपिअविलालनंग

कपालहाहाहिविरुचिर्गागत्कालेभ्यर्नूनमहंरजामि॥पंचानन
स्कावपपञ्चवर्काः स्रूपरासांनवसामरुषाः।ऊनत्स्वर्पाङ्गगदा
त्मभक्ताः श्रीसिद्धिलक्ष्मीभक्त्यर्पपद्य॥ ॥००॥मिहाविशमाचार्य
दिवविर्गस्यष्टदवतानांस्वर्वसमाप्य॥ ॥

२श्रीगुरुभक्तानमः॥नदूर्कयागिनीगन्तुपि॥वदन्तुनिवेभ्यः॥श्रुदा
अर्चयाभुद्वद्वयः॥गुरुदवद्विजात्रिसुत्रास्यववि।कात्रिहः॥००॥
मिथागिनीगन्तुवचना॥ ॥नदूर्कगन्तुव॥वेदिका।मिश्रितावापि

विप्रादीनांविधायन।तान्तिकापिप्ररक्तस्यःश्रुदास्यापिप्रकारि
ताः॥स्वागमाकंनमार्गमः।श्रीश्रुदभ्यपिपूजनी।कर्मव्यय
याविष्णुभ्यःनयित्वापर्मिद्विदि॥श्रीममप्यधिको।रास्त्रि।विष्णु
रात्राधनादिषु।यतिप्रियवतानांयःश्रुतित्रयास्तनागनी॥वि
धवायाः॥सुगादभक्त्यायाः॥पिहुगारुया॥नाथिकागः॥स्व
ना।नाय्याराय्यायातर्गुगारुया॥स्मत्र।दकीर्ननेविष्णुसुथमा
नपूजने॥सदाधिकोत्रसर्व्वर्षीमहापातकिनामापि।नगृही
हानमागृहापत्रगृहंयमंगल॥प्राप्तातिचतुवदन्तः।दानहामा

दिरिर्विना। अनिर्माल्य सनिर्माल्य सञ्जिनादिविचर्मनं॥
दिद्येर्मना वमैदुये गध पव्य सजातिरिष्ट। यदञ्जनमनि
र्माल्यं दिद्येरागपवर्गदा॥ अस्या वक्ष्यदिर्लुते वागदुये
र्मना वमै॥ तर्कयत्क्रियते सम्यक् सनिर्माल्य नदञ्जनं॥ आ
तमागानि पूष्यानि द्याता न्यवविसर्गते॥ पयतिभ्य महालुते
रानूना भमिना गथा। प्रातिरिभ्य विप्रराये॥ पूष्ये वव न संभय
॥ अगानिर्माल्यमित्युक्तं॥ ॥ वाक्कतस्यार्द्धपुष्पस्यान्। कति

यस्यापि पूजका वैभ्यस्यार्द्धचंद्रस्यान्मृदाध्वं वर्तुलाकृति॥ वि
नाहस्मिपूष्येन विना वृद्धाकृमालिका। पूजितासि महादव न
सम्यक्गुरुल्लेनर॥ ॥ ॐ कौं कौं कौं गुच्छकालिक कौं कौं कौं
कौं कौं स्वाहा॥ ॥ जानाहिलविधि॥ नासिय॥ निष्कस्यन॥ न्या
सयाय॥ निष्कस्यन॥ स्यायागुलिन॥ प्राक्षयाम॥ गायत्री॥ जाना
ल्लेनहाय॥ दुः ४ अमुय रुद्र॥ रूपलपयि स्यंगय॥ कौं मिखा
नाथयविद्वह स्वकृन्दाय श्रीमहवन्ना वृद्ध ४ पुत्री दया ॥ २१॥
गायत्रि पलपाडाका नाहिलक॥ ॥

१
 रं नमः ४ श्री कृष्णाय ॥ ॥ अह्मनतत्रयश्चान्नं धीमते कपुलाकर्त्रे
 ॥ रक्ताप्रागदिनं वन्द्यं तद्गुणं वक्ष्ये त्वयि ॥ किञ्चिदिदमुज्जा-
 न्मसं निराहं गले मयत्नं कपालमालां ॥ भक्तानि तं यं सुविला-
 लनेनैव कृपापि नाथं तमपाश्रयामि ॥ कालार्ककाटिप्रतिमप्र-
 काशं किञ्चिदिनं वन्दु गढाकलापं ॥ देखाटवीवद्वि मयं कलं ग-
 (मे) त्रासुगं वदं कृत्यामि ॥ सभाङ्क सादृश्यतनं विहारं नवी-
 ननीलनितलायताम् ॥ ससिद्धि वलाद्वि तत्रात्र गार्ग्यं विधुः

मह ३

रं गं पुरा जामिनिर्णयं ॥ यस्य प्रसादाच्च नुमानं पदं तमवयं नून-
 मवाप्य गजने ॥ कञ्चिस्मिन् दिव्यगह्वरे प्रपूजितं तूष्णीं नाथ-
 दिवयं तजामि ॥ भवस्तु या मवर्ष्मिन् वक्ष्ये गकनकारं ॥ अथार्क-
 यम् ॥ दन्तखण्डे विभूतं रूपदमत्र दयस्वयं वदं वयं च ॥ वाभीरु-
 टाङ्कमकुलं च नूस्विधुर्गं द्युल्लभ्यार्हं च द्योहसो विन्दुपाणं म-
 रिसगरुलदं नो मिना वान्मिकम् ॥ दिनकवकि वत्सर्गं दयदं धा-
 प्रविस्मं विधयन मरिगामां पाणर्विन्दुहस्तां ॥ सुललितकवय-
 मां हावकसुवत्सवामरितवरयनाम् ॥ साधय श्री कृष्णं ॥ पार्थ

लवचन्दानयवाद्यदीर्घं पद्मस्मिन् पद्मदलाय गार्क ॥ गुनस्वरूपं
 युवने प्रसिद्धं नमामि निम्नं गगलम्भवादीन ॥ भवापत्रिस्कां
 युवने कपूजिता मिन्दुपुराणि मिन्दु कलादि रूपां ॥ यस्यापुसा
 दाद्रुवने कमाहनमवाप्यते सो यथागं नमामि ॥ हिमाभुभुजा
 नमः ॥ भारमानं विलाचने यन्दु कलादि रूपां ॥ मेत्रायर्गं यं
 वने कमाभं श्रीकठनार्थं नमपाभयामि ॥ कपूजकारां कन
 कादि रूपां कत्रा ककापालधृतां कत्रस्कां ॥ वाक्मीश्वर्यां वयव

क्रवादिनी पुदीगिनेर्गं पुद्गतास्मिनिर्ग्यां ॥ विभुद्धुं छां भुनि
 रापिनेगं हागदि रूपा वयभलहसा ॥ यासापवाभकिस्व
 रूपिणावत्रोडीयदनु विपूयन्ददात्रान् ॥ वविपुर्गं लालविला
 लनेगं मारुषधर्यां मपिभकिहसा ॥ ०० छाप्रदार्गं युवने
 पुसिद्धां कोमात्रिकानामरिचिन्मामि ॥ इच्छां नमभमग
 नूपुरासां गले मजातां नवनीयमालां ॥ ममूकधर्ममाकप
 दाहर्गं श्रीवैष्णवीं विभुद्धुं नैकवन्द्यां ॥ प्राहृलनीलनि

दलाति म्मा मां विला लन नां विकते क द द्वा । त्रोडाति त्रोडां च
न द्या । न म द्यां वा गहि कान्ना मरि वा द या मि ॥ सह म न न गी कि
न वा नू व कुं । सु वि सि तां व त्त किं त्री टि रु र्वा ॥ य स्या प दा
कुं सि द (ने क पू र्वा) ना मि नु म किं स म नू स्म त्रा मि ॥ पु र्वा
उ व र्त्तु न वं चं दे रु र्वा । मु नि रा सु वा ग्रा च रु प्र च म्भु न
व च नु रु र्वा । व म्भु दि च रु त्रि च व नि वा सी । वा म्भु किं वा
त्रि च यां च व नु ॥ हि मा दि कु न्द न्द स म प्र का शं । व त्ता दि

रु र्वा सि म त या नू न गी त दा त्रि द्वा द्वाः र्वा र्वा वि ना त्रि ता र्वा । ल द्वा
र कु नि न्य स या र्जि ता नां ॥ स ग प कार्क स व र्तां गि ला य नां
क (०) व व त्ता नि वि रु षि नां मि यां । मा हि य म्भु रा दि नि सू दि
नां प ग र्वा रु र्वा नां र व द्वा र्वा ना त्रि तां ॥ य स्या ३ पु रा वा रु
ग नां कु ना नां जा र्वा वि म्भु च किं कि ल म्भु नू र्वा । व म्भु क रा सां
कु ल जा स न रु र्वा । वा गी म्भु वी नां पु रा जा मि नि न्यी ॥ म्भु ना कुं
म मि सु र्य व द्वा म्भु रु रु कि सु थ म लु ले । त न्म (०) वि धि वि

मूत्रद्विपूनमीमसदाम्भिकवशात्तस्माद्दूर्ध्वसेवसुदपत्रिगतो
 (म)का ननंभसुतसुस्माद्दूर्ध्वदूतासनस्ययसदानाखकुकनृय
 नि॥ पञ्चअस्यनीलपीतावृक्षसितकित्रक्षीवद्विजर्गनभहंनू
 मुंहाजहिह्रस्वमिपिमूकूटऊटावदुयूउर्विलार्क। दक
 उभूल्ययकुधऊवप्रदधर्वामकपात्रिजातं। सुयपूला
 हयंयसमप्रसमृदिगंदोक्वमम्ययमी॥ योमाहास्वादव
 क्रात्रविभमिकनकाहाशिनगानिप्रोदीर्गभूल्ययकुवजाक

२ पत्रा

मसुत्रविधृताकर्णिकादकृपाहो। वामदेहिच्यखर्वागद्यवि
 धर्गपूस्वयार्पकपालं वलं पृष्ठास्थिरुषा पत्रमसुखप्रदा
 पानुमांमध्वकूटो॥ योमाकर्णपर्युन्दसमप्रकाभां। शिवकि
 र्वांकांप्रगतनूपत्रिस्कां। जयात्मिकाकान्तिगुणीत्यरूपां। उ
 ।खद्युकांकालविपुलमंत्रां॥ पद्यपञ्चपत्रत। गहत्रिग
 र्गनिर्मद्ययोमपुर्णैकांशं कलजायतगिनयनं सञ्चय
 दूताकूलं। नानावस्त्रविचित्रवस्त्रमूकूटैः कयूत्रहायादिति

वीरकृष्णदत्तसखा के अथ वलयेदं दीप्यमान नूनं ॥ देहि मय प्र
कृष्ण वर्य प्रललिर्गं वाष्पं कृष्णं वर्य कं भीरु वर्य वर्य क मा
कुविधर्तं द कृत तो वा म के । ख द्वा म अ वि मूल रुट क धर्तं पा
मं पून र्य छि कां पा व व र्य क व सूरि धर्तं श्री कृष्ण मा थ
रु ॥ वा मा वा व प रि छि तां वि न य नी वा ला र्क का टि पु र्णं पी
ना नु ग ध र्ता व मा र य क मा मा मू क मा ला चि तां । द वं डा दि सु
मा सू र्य मू नि गा धे मा से य मा नी प र्ता । वा नु र्य म पु दा य नी र ग व

नी श्री कृष्ण का मा म्र य ॥ द वं नु मू लि मू कू ट क र्णं गे मा से य मा नी च
व र्ण कृष्ण मां । य स्या ४ पु सा दा र्प व मा थ लि र् श्री कृष्ण का या ४ स
न र्ण स्म रा मि ॥ सर्व स्वरूप सु क र्ण क मा से सर्व र्थ द । धो च ग ध
पु र्ण (म) । स र्वा व द ह व र्ण मा न्न रू प । श्री कृष्ण क र्ण स न र्ण पु सी
* द ॥ रु ग ल्य वि र्ण क प र्ता प र्ता म् न द्वा स्मि कां या म रि या ग म मां ।
श्री कृष्ण का ना पि र्तां कृ णा थ पु दा य क ल्य कृ म मा म्र या मि ॥ त्व
म व मा ना य त्व म व ता न । त्व म व व भू स र्ज न स्त म व । त्व म व वि शा

सुकानिस्त्वमेव तत्त्वान्यथानास्त्वपयं हिमेव ॥ ३१ ॥ ॥ निजामा
वार्थविप्रचिर्तग्राकूजायाः सुर्वसमार्यं ॥ ॥ भुर्तं ॥ सवन् ॥
नष्टम्रावनभुदि ४ था यधूनका कर्माचार्यराशधर्न स्वथया
धनसिंहदाशुयात ॥ ॥ श्री ३ स्वष्टदवनायेनम ॥ ॥

३२

रजभुर्थासुष्टिभक्तिः ऊगत्वनविष्के स्वे र्यभक्तिश्चविष्काम
भासंताभक्तिः यवनिवजनवदन्माथभक्तिस्मस्य हानेका
कर्मभक्तिः पिपूयविजयिन सर्वमेसर्वभक्तिः सर्ववामादि
भक्तिः ममददिवसगा कालिकामादिभक्तिः ॥ ॥

